हिन्दी विभाग

मोटो - गहरा ध्यान गहरा ज्ञान

डां. मोली जोण
सह प्रॉफेसर

सेक्रड हार्ट कालेज चालक्कुटी
रेलवे स्टेशन रोडं
त्रिशूर जिला, केरल
पिन : ६८०३०७

मेरा दर्शन

जब से मैं स्वतत्र रूप से ज़िन्दगी के बारे में सोचने लगी तब मैं अध्यापिका बनना चाहती थी। शायद मेरे स्कूल के अध्यापक इसकेलिए प्रेरणा के कारण हो गये थे। ईश्वर की कृपा से अन्ततोगत्वा मैं एक कालेज की अध्यापिका बन गयी। मैं मन ही मन डॉक्टर एस. राधाकृष्णन, डॉ. सी.वी. रामन जैसे प्रतिष्ठित अध्यापकों के समान बनना चाहती थी। आज तक में कालेज में और समाज में एक शिक्षित समाज के गठन में प्रयत्नरत हुँ और मरते दम तक यही मेरी महत्वाकांक्षा है।

मेरा मिशन

मेरी अध्यापिका की ज़िन्दगी चालक्कुटि के सुप्रसिद्ध महिला कालेज सेक्रट हार्ट में शुरु हुई। मैं अपने दर्शन को चालू करने में सदा प्रयत्नरत हुँ चाहे कालेज में हो अथवा समाज में हो। मैं मानती हूँ कि शिक्षित महिला कि इसी परिवार की सम्पत्ति है। अगली पीढी के सुचारु रूप से पालन पोषण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। मृत्यु तक अध्यापक अध्यापक ही है। उसे नौकरी से कोई अलग नहीं कर सकता। मन चाहता है कि केरल के इस भव्य ग्राम - शहर में शिक्षित महिलाओं से भरी जनता की सुलभता हो। आतंकवाद

और नशीली चीज़ों के सेवन से मुक्त एक स्वस्थ पीढी की परवरिश संभव हो। यही मेरा जीवन संदेश है।

मेरे बारे में

कोट्टयम जिल्ले के पाला में मेरा जन्म हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद कोचिन स्थित महाराजास कालेज से स्नातक उपाधि प्राप्त की। महाराजास कालेज में सहशिक्षा की व्यवस्था थी। स्नातकोत्तर अध्ययन पाला सेन्टतोमस कालेज में हुआ। पाला सेन्टतोमस कालेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. एन. के जोसफ के पर्यवेषण में महात्मा विश्वविद्यालय के अधीन अनुसन्धान का कार्य भी सम्पन्न हुआ। अनुसन्धान का विषय था - जैनेन्द्रकुमार के उपन्यासों में नारी पात्र - मनोवैज्ञानिक सन्दर्भ में। इसके पश्चात् चालक्कुटि एस.एच. कालेज में प्राध्यापिका के रूप में उन्नीस सौ चौरानबे में मेरी नियुक्ति हुई। आज भी इसी कालेज में सह प्रोफसर के पद पर आसीन हुँ। बचपन से ही मैं चाहती थी कि महिलाओं के उद्धार केलिए कुछ न कुछ किया जाये। कालेज और समाज में उसकेलिए काफी महत्व है। महिला घर संभालने और बच्चों की परवरिश करनें में अधिक सफल होगी। यही मेरा अनुभव है। मेरा प्रयास यह है कि जिस इलाके में जी रही हुँ वहाँ शिक्षित महिलाओं की संख्या बढती जाए। लडकियाँ हिन्दी की पढायी में बडी रुचि रखती है। हिन्दी गीत, फिल्म आदि उन्हें बेहद पसंद है।

शैषिक योग्यताएँ

पी.एच.डी - महात्मागान्धी विश्वविद्यालय कोट्टयम

एम. ए. हिन्दी - पाला सेन्टतोमस कालेज

अनुसन्धान रुचि

बचपन में कहानी पढना मुझे पसंद था । आगे चलकर यह रूचि उपन्यास में बदल गई । कविता पाठ भी मेरा प्रिय शौक था । इस कारण अनुसंधान केलिए विषय का चयन करने केलिए कहा गया तो मैंने चाहा कि विभिन्न लेखकों की राय में महिलाओं की पात्र - रचना कैसी हैं । आज भी कहानी और उपन्यास पढने का अवसर मैं खोज निकालती हुँ ।७

हिन्दी विभाग का इतिहास

१९८० में एल एफ कॉलेज से विभक्त होकर एस एच्च कॉलेज का शुभारंभ हुआ। अन्य विभाग के साथ हिन्दी का श्रीगणेश हुआ। लेकिन हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में पढायी जाती थी। विभाग शुरु होते समय श्रीमती त्रेस्यामा के.पी. विभागाध्यक्षा थी। उनकी सेवा निव्रत्ति ३१.०३.९३ को हुई। इसके बाद सिस्टर लिल्ली वी.एस. लेक्चरर के रूप में नियुक्त हुई। लिल्ली ने गाँन्धी विश्व विद्यालय से पी.एच.डी की उपाधि ग्रहण की। उनका विषय था ''बच्चन के गद्य साहित्य का विश्लेषणाल्मक अध्ययन।''

लिल्ली २००२ से विभागाध्यक्षा थी। इन्होंने कोलेज प्रिन्सिपल का कार्यभार संभालकर हिन्दी विभाग को गौरवान्वित किया। हिन्दी विभाग का सौभाग्य रहा है कि हमारी एक अध्यापिका कॉलेज की प्रिन्सिपल बनी। २०१० में सिस्टर लिल्ली वी.एस. सेवा निवृत्त हो गयी। १९९४ में श्रीमती मोली

जोन प्राध्यापिका बनी। उनको गांन्धी विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि मिली। उनका विषय था ''जैनेद्र कुमार के उपन्यासौं में नारी पात्र''

हमारे यहाँ अन्य भाषाओं की अपेक्षा हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में पढनेवाली छात्राओं की संख्या कम है। विश्वविद्यालय की परीक्षा में प्रथम श्रेणी और विशिष्ट श्रेणी में करीब शत प्रतिशत और साठ प्रतिशत पास होते है। यह हमारे लिए गौरव की बात है कि कई छात्रायें हिन्दी एम.ए. करके कई काँलेजों में लेक्चरर बनी है।

छात्राओं को उत्तेजित करने केलिए हर वर्ष हिन्दी दिवस समारोह चौदह सितंबर को आयोजित किया जाता है। प्रतियोगिताओं का आयोजन और मूल्यांकन करने केलिए बाहर से विशेषज्ञों को आमन्त्रित किये जाते है। प्रत्येक तिमाही में विशेषज्ञों द्रारा पुरे दिन का सेमिनार चलाए जाते है। इन प्रयासों में छात्राओं का पूर्ण सहयोग हमेशा प्राप्त होता है। हमारे काँलेज में छात्रों की रुचि हिन्दी में बढाने केलिए एक ''शब्दपट्ट'' (ज़्ठ्ठथ्ङ्ग ग्ठ्ठढ़ठ्ठन्दड्ड) है जिसमें हर सप्ताह एक हिन्दी शब्द उसके अंग्रेज़ी पर्याय के साथ प्रदर्शित किया जाता है। ताकि आने जानेवाले छात्र उसे देखकर कठंस्थ कर सके।

<u>महत्वपूर्ण घटनाएँ</u>

हिन्दी दिवस का समारोह हर साल आयोजित किया जाता है। निबन्ध प्रतियोगिता करके इनाम भी देते है। कार्यशाला का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है जिसमें पाठ्यविषय और पाठ्येतर विषयों पर चर्चा होती है। छात्राओं केलिए परीक्षा उपयोगी अनुवाद अभ्यास का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इन कार्यक्रमों में छात्राओं को स्वागत भाषण, कृतज्ञता ज्ञापन और प्रार्थना गीत के लिए अवसर दिए जाते हैं । कभी कभी गीत प्रस्तुति में भी वे आगे आते हैं ।

अतिरिक्त कार्यभार :

१. पी.टी. डब्ल्यू ए सचिव का कार्यभार : हर साल माता - पिता, शुभ चिंतक, अध्यापक आदि के सम्मिलित बैठक में प्रभावी परवरिश जैसे विषयों पर विचार - विमर्श का आयोजन होता हैं ।

२० संपादनं कार्य : गत चार वर्षों से मैं कालेज मैगसीन ''हृद् ज्योति'' की मुख्य संपादक हैं। इस प्रकार के कामों में सक्रिय रूप से भाग लेने में मुझे बड़ी खुशी है ।

३. विशेष ध्यान

हिंन्दी परीक्षा में कमज़ोर पाए जाने वाले विद्ध्यार्थियों की भलाई के लिए विशेष शिक्षा का आयोजन किया जाता है। बीमारी आदि के कारण लंबी छुट्टी लेनेवाले विद्यार्थियों को भी इसमें शामिल किया जाता है । गत वर्ष के प्रशनें का उत्तर् लिखने में भी अभ्यास दिया जाता है ।